फांसीवाद

अध्ययन सामग्री निर्माण
डा शकील हुसैन
shakeelvns27@gmail.com
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।
दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।
नैक द्वारा A+ मूल्यांकित

फांसीवाद

विलियम कार्नहैजर ने लिखा है कि " **फांसीवाद उदारवाद और मार्क्सवाद का प्रतिवाद है यह दक्षिण पंथ के अधिनायकवाद का दूसरा नाम है "** प्रथम विश्व युद्ध के बाद यूरोप के अनेक देशों में फांसीवादी प्रवृतियां देखी गयीं । लेकिन इटली में मुसोलिनी के नेतृत्व में फासीवाद एक विचारधारा और शासन के प्रकार के रूप में पैदा हुआ । इसकी विशेषताएं नाजीवाद से भी मिलती है अतः फांसीवाद शब्द का प्रयोग दोनो के लिए किया जाता है । फांसीवाद इटालियन शब्द **फैसियो** से बना है जिसका अर्थ होता है **लकड़ी गट्ठर** । **प्राचीन रोम में फरसा और लकड़ियों का गट्ठर सम्राट की शक्ति का प्रतीक होता था । अतः प्राचीन रोम की महानता और गौरव ज्ञान के आदर्श को लेकर ही फांसीवादियो ने इस शब्द की रचना की** , और अपने दल का नाम फासिस्ट दल रखा ।
मार्च 1919 में मिलान शहर में मुसोलिनी ने एक बैठक बुलाई यहीं से फासीवाद के विकास की शुरुआत मानी जाती है । विभिन्न घटनाक्रमों के बाद 1919 से 1927 के बीच फासीवादी दलित इटली में मजबूत होता गया और उसके नेता मुसोलिनी ने इटली के सत्ता प्राप्त कर समस्त शक्तियां अपने हाथ में केंद्रित कर ली और स्वयं को इलड्यूस की उपाधि से सम्मानित किया ।
फासीवाद एक ऐसी विचारधारा है जो तानाशाही और शक्ति के संकेंद्रण पर अपना ध्यान केंद्रित करती है ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

परिभाषा

ईबन्स्टीन के शब्दों में "फासीवाद एक दल के अधिनायकत्व में सरकार व समाज का एक अधिनायक तावादी संगठन है जो अत्यधिक राष्ट्रवादी रंगभेद वादी नस्ल वादी आतंकवादी और साम्राज्यवादी होता है"

सैबाइन के शब्दों में "फासीवाद विभिन्न स्रोतों से लिए गए अधिनायकवादी विचारों का एक संकलन है । "

<u>फासीवाद के स्रोत</u>

तत्कालीन यूरोप में वैज्ञानिक चेतना और के साथ साथ कुछ अबुद्धि वादी विचारधारा का भी विस्तार हुआ था । ऐसी बहुत सारी चीजे मिलकर ऐसे प्रभावी स्रोत बने जिन्होंने फांसीवाद के लिए वैचारिक खाद का काम किया फांसीवाद पर चार विचारधाराओं का प्रभाव प्रमुख रूप से पड़ा ।

डार्विनवाद का प्रभाव

फासीवाद पर डार्विनवाद के **शक्तिशाली की उत्तरजीविता** या शक्तिशाली ही जीवित रहेगा, इस सिद्धांत का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा ।

अबुद्धिवादी विचारधारा का प्रभाव

नीत्शे, सोरेल शॉपेनहावर अबुद्धिवादी विचारको से भी फासीवाद बहुत प्रभावित था । नीत्शे ने अंधश्रद्धाओं की एक दार्शनिक व्याख्या की जो फांसीवादियो को बहुत पसंद है ।

परंपरावादका प्रभाव

परंपराओं और इतिहास के गौरवगान से सभी फासीवादी और तानाशाही आ प्रेरणा पाते हैं । परम्पराओं की महानता और इतिहास के गौरवगान मे भरोसा करते हैं ।

आदर्शवादी विचारधारा का प्रभाव

आदर्शवाद राज्य को व्यक्ति से उच्च मानता है । राज्य को साध्य और व्यक्ति को साधन मानता है । इस बात का भी फासीवाद पर प्रभाव दिखता है क्योंकि फासीवाद फासीवाद राज्य को बहुत ऊंचा स्थान देता है ।

<u>फांसीवाद की मूल मान्यताएं या विशेषताएं</u>

राज्य सर्वोच्च नैतिक ईकाई है ।

मुसोलिनी कहता था कि राज्य के बाहर कुछ नहीं राज्य के ऊपर कुछ नहीं और राज्य के विरुद्ध कुछ नहीं । इस प्रकार फासीवादियो की मान्यता है कि राज्य सर्वोच्च नैतिक इकाई है और इसकी आज्ञाओं का आंख मूंदकर के पालन किया जाना चाहिए । यह राज्य को एक देवता तुल्य मानता है और राज्य की श्रेष्ठता के आगे नागरिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है । कुछ लोगों की स्वतंत्रता की बलि देकर राज्य को शक्तिशाली बनाए जाने को यह अच्छा मानता है। इस दृष्टि से फासीवाद का संबंध केवल मुसोलिनी हिटलर से या इटली से इटली से नहीं है बल्कि फासीवाद एक मनोवृति और तानाशाही शासन की एक प्रमुख विशेषता है

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

नेतृत्व पूजा

हिटलर का यह नारा था -**एक देश एक नेता** ।

फासीवाद और नाजीवाद नेताओं की श्रेष्ठता और नतृत्व पूजा पर अंधश्रद्धा रखता है । इटली में में **मुसोलिनी को इलड्यूस** और जर्मनी में **हिटलर को फ्यूहर** कहा जाता था । नेतृत्व के प्रति अंधश्रद्धा और नेतृत्व से कोई प्रश्न न पूछना यह फासीवाद की प्रमुख विशेषता है ।

इतिहासवाद

फांसीवाद हर समस्या का समाधान प्रायः इतिहास से निकाल कर देता है । इतिहास के गौरवगान और इतिहास की महानता, इतिहास के महान नायकों का रोज प्रस्तुतीकरण होता है । जैसे हम इतिहास मे हीं जी रहे हैं । इतिहास की गौरव गाथा के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं को भुलाने का प्रयत्न किया जाता है और यह बताया जाता है कि हम इतिहास में इतने महान थे अतः हमें फिर से उसी महानता को प्राप्त करना है । इसीलिए एक शक्तिशाली नेता और एक शक्तिशाली राज्य जरूरी है उसके आगे और स्वतंत्रता आदि का कोई मूल्य नहीं है।

सांस्कृतिक श्रेष्ठता

फासीवाद संस्कृति की सर्वश्रेष्ठता में भरोसा करता है । मुसोलिनी लोगों को यह भरोसा दिलाता था की महान रोमन साम्राज्य ने दुनिया को सभ्यता सिखाई और असभ्य लोगों को जीना सिखाया । रोम की सभ्यता और संस्कृति दुनिया में सर्वश्रेष्ठ थी जिसकी पुनर्स्थापना मुसोलिनी के नेतृत्व में की जाएगी ।

दुनिया में सभी फासीवादी ताकतें इस सांस्कृतिक सर्वश्रेष्ठता की भावना में विश्वास करती हैं और अपनी अपनी संस्कृतियों को सर्वश्रेष्ठ मान कर दूसरों को निम्न कोटि का मानती हैं ।

उग्रराष्ट्रवाद

फांसीवाद उग्र राष्ट्रवाद के माध्यम से राजनीतिक एकीकरण का प्रयास करता है लोकतंत्र में लोगों के बीच जो मत मतांतर होते हैं उनके द्वारा राजनीतिक गतिशीलता प्राप्त करने की कोशिश की जाती है । इसके विपरीत फांसीवासी यह मानता है कि लोगों के बीच चिंतन शक्ति और विचार शक्ति होनी ही नही चाहिए । क्योंकि इससे लोगों में मत वैभिन्न ने बढ़ता है जो नेता व राज्य के लिए खतरनाक है । सोचने विचारने चिंतन करने का काम केवल मुट्ठी भर लोग करें जो राष्ट्रीय नेता के अनुयाई हैं और बाकी लोग केवल उनकी बातों का पालन करें । फासीवाद में राजनीतिक एकीकरण इसी प्रकार स्थापित किया जाता है । उग्र राष्ट्रवाद के माध्यम से लोगों को एक मिथ्या चेतना में रखा जाता है जिससे लोग अपनी समस्याएं भूले रहते हैं । फलतः नेता और उसकी शक्ति मजबूत होती रहती है । इस प्रकार उग्र राष्ट्रवाद फासीवादी शासन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है ।

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

युद्ध प्रेम

किसी नकली या काल्पनिक शत्रु के खतरे के नाम पर फासीवाद लोगों को युद्ध की मानसिकता में जिंदा रखता है । सदैव एक कॉमन एनीमी सामने रखा जाता है जो देश और समाज का शत्रु बताया जाता है । इस कॉमन एनीमि या सामान्य शत्रु के खतरे से बचने के लिए नेता को ताकतवर करना जरूरी होता है, और इस इस भुलावे में लोग

अपना सब कुछ त्यागने के लिए तत्पर रहते हैं । अतः युद्ध और युद्ध के प्रति सदैव तैयार रहने की मानसिकता फांसी बात का एक प्रमुख रणनीतिक हथियार है

समाज को हिंसक बनाना

फासीवाद लोगों पर नियंत्रण रखने के लिए समाज के किसी खास वर्ग को हिंसक बनाने की कोशिश भी करता है। यह वर्ग सामान्यत: शासक वर्ग या नेता का अंध समर्थक होता है और इसके हित शासक और नेता से जुड़े होते हैं । फासीवादी लोग समाज के कुछ हिस्से को किसी अज्ञात शत्रु या खतरे के नाम पर हिंसा के लिए तैयार रखते हैं फलतः समाज में एक **हारावल दस्ता** तैयार हो जाता है । ।यह दस्ता नेता की तरफ से स्वयं को समाज का रक्षक बताता है और इसे सरकार का पूरा समर्थन प्राप्त होता है । धीरे-धीरे इनको सैनिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है और जैसे जैसे नेता की शक्ति मजबूत होती है इनका आकार भी बड़ा होता जाता है इटली और जर्मनी में यही हुआ दोनों ही तानाशाहो ने एक निश्चित हरावल दस्ता तैयार किया जो सैनिक रूप से प्रशिक्षित और अत्यधिक हिंसक था । मुसोलिनी ने के हिंसक दल की वर्दी **काली शर्ट्स** और हिटलर के हिंसक हरावल दस्ते की वर्दी **ब्राउन शर्ट** थी इन्होंने जर्मनी और इटली में अत्यधिक आतंक मचाया था और समाज के दूसरे वर्ग इन से डरे हुए रहते थे । इस प्रकार के हारावल दस्ते लगभग सभी फासीवादी शासकों और दलों की विशेषता है कई दल ऐसे हो सकते हैं जो घोषित रूप से फांसी वादी नहीं होते लेकिन उनकी सारी तरकीबें, आदतें हैं और नीतियां फासीवादी होती हैं।

निगमित राज्य

फासीवादी राज्य वस्तुतः कारपोरेट राज्य होता है । फासीवाद की अर्थव्यवस्था कारपोरेट के माध्यम से काम करती है इसीलिए से निगमित राज्य भी कहा जाता है । इसमे छोटे उद्योगों के लिए स्थान नहीं होता बल्कि बड़े-बड़े निगमों के माध्यम से अर्थव्यवस्था को संचालित किया जाता है इन निगमों पर अप्रत्यक्ष रूप से राज्य का सीधा नियंत्रण होता है । वस्तुतः छोटे उद्योगों का अर्थ होता है एक प्रकार की आर्थिक स्वतंत्रता । लोग अपनी पसंद का कार्य अपने पसंद के उद्योग व्यापार कर सकते हैं । लेकिन स्वतंत्रता का फासीवादी राज्य में कोई स्थान नहीं है भले ही वह आर्थिक स्वतंत्रता क्यों ना हो । इसलिए लोगों को और मझोले उद्योगों को बड़े उद्योगों और बड़े बड़े कारपोरेट के माध्यम से ही काम करना पड़ता है ।

अबुद्धिवादी

चिंतन परंपरा ,सोचना समझना, प्रश्न पूछना इत्यादि फासीवादी राज्य में एक वर्जित कार्य है । फासीवादी शासन प्रणाली में सोचने वाले दिमागो की कोई आवश्यकता नहीं होती इसमें केवल एक **आज्ञा पालक समाज** बनाया जाता है, जिसके सामने बड़े-बड़े आदर्श होते हैं, महान स्वप्निल बातें होती हैं जिनका यथार्थ से कोई संबंध नहीं होता है । स्वप्निल बातों का भुलावा ही जीवन का सर्वोच्च मूल्य होता है । यह इस मान्यता में विश्वास करता है कि राज्य की शक्ति और नेता की महानता और दैवीय शक्ति के द्वारा ही समाज का कल्याण कल्याण होगा । इसलिए फासीवाद और बुद्धि बात का हमेशा विरोध है। यह पूर्णतः अबुद्धिवादी विचारधारा है जिसकी मान्यता है कि समाज में प्रबुद्धता नहीं होती बल्कि प्रबुद्धता थोड़े से लोगों में होती है और इनका यह दायित्व है कि

DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

समाज का मार्गदर्शन करें । यह प्रबुद्ध वर्ग स्वाभाविक तौर पर शासक वर्ग या फासीवादी वर्ग के साथ होता है ।

अतः अबुद्धिवाद और फासीवाद दोनों पूरक है।

झूठा प्रचार तंत्र

झूठा प्रचार तंत्र फासीवाद की सबसे बड़ी ताकत होती है हिटलर का प्रचार मंत्री **गोएबल्स** यह मानता था कि किसी झूठ को यदि अच्छी तरीके से बार-बार बोला जाए तो वह सच जैसी मजबूती के साथ स्थापित हो जाता है । अतः प्रचार तंत्र फासीवाद का सबसे मजबूत उपकरण है इतिहास की झूठी कहानियां गढ़ी जाती हैं , इतिहास के महानायको के नाम से अनेक नयी कहानियां बनाई जाती हैं ,विरोधियों के बारे में अफवाहें और झूठी बातें बड़ी मजबूती से प्रस्तुत की है, इस बात का पूरा इंतजाम किया जाता है कि लोग विरोधियो की बात और नेता की आलोचना सुनने न पाएं । अतः केवल एक ही बात सुनने के कारण लोग धीरे-धीरे उस पर भरोसा करने लगते हैं अतः झूठा प्रजातंत्र फासीवाद के लिए प्राण वायु का काम करता है ।

निष्कर्ष

फासीवाद वह विचारधारा है जिसका लोकतंत्र से सीधा विरोध है । लोकतंत्र जहां लोगों की शक्ति स्वतंत्रता और उनके बुद्धि विवेक पर विश्वास करता है वहीं फासीवाद स्वतंत्रता के नाश और बुद्धि विवेक के समर्पण तथा नेता की शक्ति और राज्य के सर्वशक्तिमान होने पर विश्वास करता है । यह दल नेता राज्य और सेना सबको एक कर देता है । **अर्थात नेता ही दल है, दलही राज्य है ,और राज्य ही सेना है** और सभी को इसके प्रति आज्ञाकारी और नतमस्तक होना चाहिए। इस प्रकार फांसीवाद एक राजनीतिक मनोवृति है जो लोकतंत्र के विरुद्ध कार्य करती है यह कहीं भी किसी भी रूप में हो सकती है ऐसे अनेक उदाहरण है जब लोकतांत्रिक सरकारें फासीवादी सरकारों में बदल गई यह ध्यान देने योग्य बातें की मुसोलिनी और हिटलर थी जनता के वोटों के माध्यम से चुनकर आए थे । अतः फासीवाद एक राजनीतिक विचारधारा और मनोवृति है।

गृहकार्य

1- फांसीवाद की अवधारणा और मूल मान्यताओ की समीक्षा कीजिए ।

2- फांसीवाद के प्रमुख सैद्धान्तिक स्रोतो की समीक्षा कीजिए ।

संदर्भ

आनलाइन रिसोर्स

दुर्ग (छत्तीसगढ़)
DR. SHAKEEL HUSAIN
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

https://www-livescience-com.cdn.ampproject.org/v/s/www.livescience.com/

https://www.historians.org/about-aha-and-membership/aha-history-and-archives/gi-roundtable-series/pamphlets/em-18-what-is-the-future-of-italy-(1945)/the-rise-and-fall-of-fascism

Feed Back link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdRpNmu6PZ-AMoLrMvODCDwa6-tG3nPDU_Lk-VyjnKKhmfErw/viewform

DR. SHAKEEL HUSAIN

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE